eBook

Hindi Bible Class

रोमियों की पत्री

1

Pr.Valson Samuel

more details

Pastor.Benny
Thodupuzha
MOb: 9447 82 83 83

Pastor.Rajan Victor
Trivandrum
MOb:9495 333 978

Editing & Publishing

Amen TV Network
Trivandrum,Kerala
Mob : 999 59 75 980 - 755 99 75 980
Youtube : amentvnetwork

यह शब्द अध्ययन संदेश मेरी आध्यात्मिक जीवन यात्रा में सच्चे वचन से परमेश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा प्रकट किए गए आध्यात्मिक संदेशों को व्यक्त करने के लिए तैयार किया गया है।हम ऐसे समय में रहते हैं जहां सत्य का वचन दुर्लभ है। इस अवधि के दौरान एक समूह को सत्य के वचन के वास्तविक गवाह के रूप में चर्च ऑफ गॉड में ढाला जाना चाहिए। परमेश्वर के सेवक जो सत्य के वचन के द्वारा मसीह यीशु के सच्चे चेले बन गए हैं और जो वचन पर चलते हैं और वचन को मानते हैं, उन्हें इन दिनों में आत्मा की पूर्णता और शक्ति के साथ उठना होगा। अतीत में, प्रेरितों ने पूरी दक्षता के साथ परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया, वे दूत जिन्होंने परमेश्वर के वचन में कुछ भी जोड़े बिना पवित्रता और परमेश्वर की आज्ञा के साथ मसीह यीशु में परमेश्वर के वचन को बोला।उन्होंने यीशु मसीह के बारे में सच्चाई का प्रचार किया।उन्होंने सच्चाई के वचन का प्रचार करके और ऐसे सेवक बनकर मसीह के महान मिशन को ईमानदारी से पूरा किया, जिन्हें शर्मिंदा होने की कोई बात नहीं है।जब वचन की घोषणा की जाती है, तो यह केवल मनुष्य का वचन नहीं है, बल्कि जो लोग वचन सुनते हैं वे केवल मनुष्य का वचन नहीं हैं, यह वास्तव में परमेश्वर का वचन है, और इस तरह की सेवकाई इन दिनों परमेश्वर की कलीसिया में उठनी चाहिए .यीशु यहोवा उन यहूदियों को जो उस पर विश्वास करते थे, समाचार देते हैं,यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो तुम सचमुच मेरे चेले बनोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। एक समूह जिसने सत्य के वचन के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त की है, एक समूह जो सत्य के वचन की स्वतंत्रता का संदेश देता है, उसे इन दिनों परमेश्वर के वचन का साक्षी होना चाहिए।आत्मा में शब्द की सच्चाई को समझना चाहिए। आत्मा में वचन की सच्चाई का संचार होना चाहिए, जो शब्द समझ में आता है उसे अच्छे दिल में एकत्र करना चाहिए और अच्छे फल के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करनी चाहिए।वैसे भी, चर्च ऑफ गॉड को ईश्वर के वचन से बनाया जाना चाहिए, चर्च ऑफ गॉड, जो कि जीवित ईश्वर का मंदिर है, को इन दिनों सत्य के स्तंभ और नींव के रूप में अपना मिशन करना है।प्रभु का आगमन निकट है। प्रभु के आने के लिए एक समूह तैयार किया जाना चाहिए। यह शब्द अध्ययन संदेश विशेष रूप से उपरोक्त तथ्यों को सूचित करने के लिए तैयार किया गया है ताकि वे सत्य के गवाह के रूप में प्रभु के आने के लिएतैयार हो सकें। उन दिनों में शब्द की सच्चाई को समझ कर।मैं ईमानदारी से प्रार्थना करता हूं कि यह पुस्तक आपके काम आएगी

सादर

Pr.Valson Samuel

आप रोमियों को पत्री के पहले अध्याय के पाँच से सात छंद पढ़ सकते हैं
जिस के द्वारा हमें अनुग्रह और प्रेरिताई मिली; कि उसके नाम के कारण सब जातियों के लोग विश्वास करके उस की मानें। जिन में से तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो। उन सब के नाम जो रोम में परमेश्वर के प्यारे हैं और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं॥ हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे॥
इस लेख की शुरुआत में प्रेरित पौलुस हमें एक पद में यीशु मसीह के जीवन के बारे में बताता है। मांस से, दाऊद के वंश से पैदा हुआ। हमारा पहला जन्म शरीर में होता है, इसलिए मरना और फिर से उठना एक महान आध्यात्मिक नियम है। लेखों में हम देखते हैं कि हम इस धरती पर रहते हुए मरे हुए और जीवित हैंअर्थात्, हम में पहला जन्म, आदमिक मनुष्य, या आदमिक मनुष्य में व्यवस्था, अवश्य ही मरना चाहिए तभी हम इस धरती पर एक महान जीवन जी सकते हैं, यह एक आध्यात्मिक सिद्धांत है। मांस और लहू परमेश्वर के राज्य के वारिस नहीं हो सकते। तब हम आदम के स्वरूप में परमेश्वर के राज्य का जीवन कभी नहीं जी सकते। हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिये फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो।
यही आध्यात्मिक सिद्धांत है। तब मरे हुओं का पुनरुत्थान पवित्रता की आत्मा में परमेश्वर का पुत्र होने के लिए शक्तिशाली रूप से निर्धारित होता है, और यह हमारे जीवन पर भी लागू होता है। अर्थात्, पृथ्वी पर रहते हुए आत्मा की आज्ञाकारिता के जीवन में पवित्रता पवित्र आत्मा का एक गुण है। यह आत्मा की आज्ञाकारिता में जीने से है कि हम उस पवित्रता को प्राप्त करते हैं जो परमेश्वर हमारे लिए चाहता है। क्योंकि लिखा है, कि पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं।उपरोक्त पद हमारे चलने की बात करता है और आज्ञाकारी बालकों की नाईं अपनी अज्ञानता के समय की पुरानी अभिलाषाओं के सदृश न बनो। अर्थात्, आदम और हव्वा के उदाहरण का अनुसरण किए बिना आपको बुलाए गए संत के अनुसार पवित्रता नामक एक शब्द है जब हमें हर तरह से पवित्र होने की आज्ञा दी जाती है, तो वह पवित्रता की भावना से होती है
यह तब होता है जब हम जीना शुरू करते हैं कि हम आत्मा के माध्यम से दिव्य पवित्रता प्राप्त करते हैं आस्था का पालन करें। तो अगर यह हमें उस चीज़ के प्रति आज्ञाकारिता में नहीं लाता है जिसे हम मानते हैं, तो यह केवल एक खोखली मान्यता है यह बस समय की बात है। यह समय की बात है । इब्रानी पत्र में यह विश्वास में नहीं बदला। जब प्रेरित ने सेवकाई प्राप्त की, तो उसने सेवकाई प्राप्त की ताकि वह उस वचन का पालन कर सके जिसका उसने प्रचार किया था, जब वह विश्वास के साथ ग्रहण किया गया था। फिर उस शब्द का उच्चारण करने वाले की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है.. जब यह घोषित किया जाता है तो शब्द को आत्मा में संप्रेषित किया जाना चाहिए। या यह पत्थर में लिखा हुआ एक दस्तावेज है। यह सिर्फ स्याही लेखन नहीं है, यह किताब में छंद है। जब परमेश्वर का सेवक आत्मा में इसका प्रचार करता है, तो उसे आत्मा और जीवन के रूप में दिलों में प्रवेश करना चाहिए। जैसे, वचन पर हमारे ध्यान में, हमारे मन में, हमें समारोह में दो अध्याय नहीं पढ़ना चाहिए, लेकिन इसे आत्मा में ही प्राप्त करना चाहिए।

तभी आज्ञाकारिता आएगी, जीवन को आज्ञाकारिता कहा जाता है। हमारे अंदर जो भी जीवन है, वही जीवन निकलेगा। तो उस हद तक आज्ञाकारिता कोई प्रयास नहीं है, यह एक जीवन बन जाता है। जब परमेश्वर का वचन विश्वास से जीवन और आत्मा की व्यवस्था के रूप में लिखा जाता है, और वह जीवन हम में प्रचुर मात्रा में होता है, तो वह जीवन हम में प्रतिबिम्बित होगा। इस प्रकार हमें सातवें पद में यीशु मसीह के पास बुलाया गया है। यह मुख्य रूप से हमारे भीतर से आया होगा। हम सृष्टि हैं, हमें बनाने के लिए ईश्वर का एक दिव्य उद्देश्य है। हमें अपनी इच्छा के अनुसार अपनी स्वतंत्र इच्छा का धर्मशास्त्र नहीं बनाना है। या हमें विश्वास करना चाहिए कि हमें परमेश्वर के वचन से समझना चाहिए कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। तब हमें अपना जीवन इसके लिए समर्पित करना चाहिए ताकि हम में परमेश्वर की इच्छा पूरी हो सके। तब हम मसीह के लिए बुलाए गए समूह हैं। रोमियों के लिए पत्री के पहले अध्याय का सोलह पद पढ़ें । क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है। जब सुसमाचार की बात आती है तो यहाँ मसीह का सिद्धांत है। मसीह का सिद्धांत उसने हमें अपना जीवन और अपना जीवन दिखाया। इसका खुलासा उन्होंने अपने मंत्रालय में भी किया था। इसलिए जब हम उन तीन क्षेत्रों के बारे में सोचते हैं, तो वह प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा है। हर कोई जो इसमें विश्वास करता है उसे याद रखना चाहिए कि विश्वास कोई विश्वास नहीं है जो सिर में निहित है। विश्वास जीवन में आज्ञाकारिता और आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। यह विश्वास है जब हम अपने भीतर प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार प्राप्त करते हैं। यह केवल विश्वास नहीं है, यह कर्म में विश्वास है यह विश्वास है जो आज्ञाकारिता की ओर ले जाता है। और उसके द्वारा हम आत्मा के द्वारा नेकी का जीवन जीते हैं। आत्मा लगातार हमारे भीतर निवास कर रही है। इसलिए जब हम पढ़ते और सुनते हैं, तो यह आत्मा ही है जो हमें अपने भीतर जीवन या विश्वास देती है। इसे विश्वास में बदलें और जीवन बनें। जब वह जीवन हमारे भीतर स्थानांतरित हो जाता है, तो उसका जीवन हम में आ जाता है और उसमें से धार्मिकता का वचन आता है। तब वह धर्ममय जीवन होगा, यदि वह हमारे भीतर लिखा हो। वचन के अनुसार धार्मिकता धार्मिकता में जीवन होगी। जब हम धार्मिकता के उस वचन को प्राप्त करते हैं जो हमारे भीतर प्रचुर मात्रा में है जिसे खोजने और करने की आवश्यकता है, तो जीवन हमारा जीवन बन जाता है। लेकिन वह जीवन आत्मा के बिना नहीं जीया जा सकता। जीवन परमेश्वर की पवित्र आत्मा में होना चाहिए पर मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।जैसा कि मुझे आमतौर पर याद है, जब यह शब्द हमारे पास आता है, तो जीवन वचन से आता है। आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था।सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई। उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी। प्रकाश क्रिया है। मैं इसे निम्नलिखित श्लोकों में फिर से प्रकट करूंगा। नेकी के काम जो हम से आते हैं जब हम प्रकाश कहते हैं।

यह आत्म-धार्मिकता का कार्य नहीं है, यह हमारा प्रयास नहीं है, यह वह कार्य नहीं है जो हमारे लिए किया जाता है, यह वह सेवकाई नहीं है जो परमेश्वर ने हमें दी है। कि परमेश्वर का जीवन हम में से निकले, परमेश्वर किसके द्वारा पृथ्वी पर रहना चाहता है? हमारे द्वारा। कितने लोगों को मिला। परमेश्वर पृथ्वी पर रहना चाहता है लेकिन हमारे द्वारा रहता है। तब परमेश्वर का जीवन, परमेश्वर के कार्य, सभी हमारे जीवन से निकलेंगे। यह उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है। उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति वह शब्द है जो आत्मा में प्राप्त होता है। तब हम यह न कहें कि हम बच गए हैं।जब हम पश्चाताप करते हैं और बपतिस्मा लेते हैं और उद्धार के मार्ग में प्रवेश करते हैं, तो हम पिछले पापों से बच जाते हैं। लेकिन हमें अपने पुनर्जन्म के बाद मोक्ष का जीवन जीना होगा। हम पतरस की पत्री में पढ़ते हैं नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ। यहाँ उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है। विकास दो क्षेत्रों में है। जीवन है और ताकत होनी चाहिए। जीवन है तो अस्पताल में बेहोश पड़े लोगों की तरह होगा। जीवन है लेकिन शक्ति नहीं है। तभी जीवन और ऊर्जा एक साथ आते हैं। फिर यहाँ बैठे हम में जीवन ही नहीं, जीवन में भी एक शक्ति है। इसलिए हम वचन को बहुत ध्यान से सुन रहे हैं। फिर वहाँ है सुसमाचार, मसीह का वचन, मसीह का सिद्धांत। तब कोई विश्वास में बपतिस्मा लेता और आत्मा में बपतिस्मा लेता। लेकिन वचन के बिना, उद्धार के लिए परमेश्वर की कोईशक्ति नहीं है। हमारे आस-पास कई ताकतें हैं जो हमें सब ठीक कर देंगी और हम उसपरटिके नहीं रह पाएंगे। शक्ति के लिए परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर के वचन कीआवश्यकता होती है। शब्द के बिना कोई शक्ति नहीं है। बपतिस्मे के समय हमारा बाहरी शरीर एक शक्ति की तरह महसूस कर सकता है, लेकिन यह शक्ति सबसे ऊपर है। यह परमेश्वर की आत्मा में बाहर और अंदर की शक्ति है जो हमारे भीतर इस सब का विरोध करती है और वह महान शक्ति है। वह एक शर्त हमारे भीतर लिखी हुई है।हम उस स्तर तक बढ़ते हैं जहां न तो पाप की स्थिति और न ही दुनिया की व्यवस्था उस स्थिति को पार कर सकती है। सत्रहवाँ श्लोक क्योंकि उस में परमेश्वर की धामिर्कता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा॥ यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण श्लोक है। इसमें परमेश्वर की धार्मिकता का सुसमाचार है। सुसमाचार जीवित शब्द है। परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास के द्वारा हमारे पास आती है, क्योंकि हम जीवन के वचन में परमेश्वर की धार्मिकता पर विश्वास करते हैं। यही शुरुआत है। जब हम पाप में होते हैं, जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, जब हम इस सच्चाई को समझते हैं, जब हम अपने दिल से विश्वास करते हैं, जब हम अपने दिल से विश्वास करते हैं, जब हम अपने मुंह से धार्मिकता के लिए स्वीकार करते हैं, यह हमारे उद्धार के लिए हमारे जीवन की शुरुआत है .पापों को क्षमा किया जाता है जब हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं और विश्वास का बपतिस्मा प्राप्त करते हैं ये है मेरा प्यारा बेटा स्वर्ग घोषित करता है। पिछले पाप हमें उस समय तक किए गए किसी भी पाप के लिए दंडित किए बिना अकेला छोड़ देते हैं। यह सब यहोवा हमें क्षमा करता है। यही वह है जो हमें विश्वास द्वारा औचित्य के माध्यम से मिलताहै।

लेकिन जिंदगी यहीं खत्म नहीं होती, जिंदगी वहीं से शुरू होती है। जब यहोवा किसी को विश्वास से धर्मी ठहराता है, तो मैं अपने धर्म के कारण धर्मी ठहरता हूं। लेकिन जो न्यायसंगत है वह अब एक बड़ी जिम्मेदारी में प्रवेश कर रहा है। वह अब पुराना जीवन नहीं जीता है। रोमियों को पत्री के छठे अध्याय में जीवन के नवीनीकरण में चलने के लिए वह एक नए जीवन में प्रवेश कर रहा है। उसे विश्वास से जीना चाहिए। तब उसे जीने के लिए वचन प्राप्त करना होगा। परमेश्वर का आत्मा हमें यह वचन देने के लिए दिया गया है। एक क्षेत्र जिसे आज अधिकांश लोग याद करते हैं, वह है परमेश्वर की आत्मा के द्वारा इन शिक्षाओं को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की आत्मा का वास करना और आत्मा द्वारा सच्चाई पर चलना। इसका ज्ञान या वह ज्ञान बहुत सीमित है। वहीं हम असफल हो जाते हैं। आप केवल विश्वास से जी सकते हैं। विश्वास प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा है, स्वर्ग के राज्य का संदेश स्वर्ग के राज्य का जीवन हमें एक आज्ञा के रूप में निर्देश के रूप में दिया गया है। आदम के जीवन में उसकी मृत्यु हो गई जब उसने उस आज्ञा की अवहेलना की वे जीवन के दायरे में थे लेकिन वे वहीं मर गए। यहोवा की युक्ति और आज्ञा इतनी गम्भीर है। आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं वे आ उस शब्द में जीवन है और हमें उस पर विश्वास करना चाहिए। केवल वे लोग जो उस माप में विश्वास करते हैं, वे इसे जीवित प्राप्त करेंगे। तब हमें यह समझना शुरू करना चाहिए कि परमेश्वर का वचन हम में क्या लिखा है। हमें पता होना चाहिए कि जीवन बाहर आ रहा है..तो यह सच है कि हमारी प्रार्थना सिर्फ एक अनुष्ठान प्रार्थना नहीं है। हमें समझना चाहिए कि इसके भीतर एक जीवन है। जब हम वचन को पढ़ते हैं, तो आत्मा न केवल इसे पढ़ता है, बल्कि हम पर इसकी सभी सच्चाइयों को प्रकट करता है। जैसे, हम पाते हैं कि जीवन के दायरे में दुनिया का प्यार कम होता जा रहा है। हम देखते हैं कि हमारी जिद और जिद कम होती जा रही है। धन की लालसा कम होती दिख रही है। क्योंकि शब्द उतना ही शक्तिशाली है। परमेश्वर का वचन हमारे अंदर के सभी क्षेत्रों को तोड़ देता है कि हम परमेश्वर के वचन के रूप में नहीं पहुंच सकते। यह वचन का एक कार्य है। फिर मिटाने, गिराने, गिराने, नष्ट करने के लिए काम और बुवाई करनी चाहिए। यह काम का पुराना स्वरूप नहीं है, यह केवल एक चीज है जो टूट गई है। फिर परमेश्वर के वचन के द्वारा एक नया कार्य करना है। इसलिए रोमियों को पत्री का अध्ययन करते समय इन दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। विश्वास द्वारा औचित्य कोई भी कार्य इसका कारण नहीं है। जब वे पद नीचे आएंगे तो मैं इसे थोड़ा और समझाऊंगा। जब हम मसीह में छुटकारे में विश्वास करते हैं तो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराना तब होता है।जैसे, विश्वास के द्वारा न्यायसंगत जीवन जीना ही संभव है। उसका पुराना जीवन धार्मिकता का जीवन नहीं है। वह न्याय कहाँ से आता है? हमें इसे परमेश्वर के वचन से, धार्मिकता के वचन से प्राप्त करना चाहिए। धार्मिकता को भूख-प्यास चाहिए। अनुग्रह और न्याय की प्रचुरता होनी चाहिए। आत्मा की बहुतायत में आने के लिए। फिर इतने सारे क्षेत्र हैं कि परमेश्वर का आत्मा हमें वह सब दिखाएगा जो हमें प्राप्त करने की आवश्यकता है। यहीं पर हमें अपने प्रेरितिक अध्ययन में इसकी तलाश करने की आवश्यकता है।

एक्सप्लोर करें देश पूर्णता की यात्रा की तलाश में है। यह तब होता है जब हम इच्छा के साथ बैठते हैं कि भगवान की आत्मा हमें इस मार्ग को प्रकट करती है। यह वह वचन है जो हमें अनुग्रह और शक्ति देता है। हमारे अंदर जो लिखा है वो इतना आगे रहता है मेरा धर्मी विश्वास से जीवित रहेगा। उस विश्वास के जीवन से ही धर्म के कार्य उभरने लगते हैं। यह उनका अपना न्याय नहीं है। यह लोगों को दिखाने वाला शो नहीं है। जब धार्मिकता का वचन हमें भरता या भरता है, तो उसके कार्य हमारे जीवन में प्रकट होंगे। आइए हम रोमियों के लिए पत्री के दूसरे अध्याय के सातवें पद को पढ़ें। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। इससे पहले कि हम उस पद के बारे में सोचें, मैं उस पद्यांश में कुछ छंद जोड़ना चाहूंगा जिसके बारे में हमने पहले सोचा था। अंग्रेजी में पढ़ते समय वहां आस्था से धार्मिकता का जीवन faith to faith अर्थात् यह विश्वास का पहला गीत नहीं है। जब हम विश्वास के पहले कदम में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं, तो हम याकूब के कदम दर कदम विश्वास के रूप में जीते हैं। तब परमेश्वर का आत्मा हमें सदा उस विश्वास का वचन देगा जो उसके लिये है। यह शब्द को बढ़ने देगा। वह हमें हमारे जीवन को नवीनीकृत करने के लिए वचन देगा। जब बढ़ने की बात आती है तो अच्छा काम। यह शब्द आध्यात्मिक ग्रह के रूप में निर्मित होने के लिए दिया गया है। जब यह सब एक साथ मिल जाता है, तो यह सच्चे आध्यात्मिक विकास का जीवन बन जाता है। मैंने नेकी के काम किए हैं। प्रकाश या प्रकाश। मत्ती का सुसमाचार, अध्याय 5, पद सोलह उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥ इसलिए लोगों ने आपके अच्छे कामों को देखा। वे कार्य धार्मिकता के कार्य हैं। यह ऐसे कार्य हैं जो परमेश्वर की धार्मिकता से आते हैं। इसकी कभी प्रशंसा नहीं की जाएगी। यह बेहोश दिल के लिए नहीं है। क्योंकि जब वे परमेश्वर की उस धार्मिकता में रहना शुरू करते हैं, तो उसकी सारी महिमा परमेश्वर की होती है। प्रकाश देना भी है। जैसा कि हम यहां पढ़ते हैं, वे कार्य प्रकाश में आते हैं। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें॥ वह प्रकाश जीवन से है जब कहा जाता है। उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी। वह जीवन वचन से है। तब हमें उस आदेश को समझना चाहिए। वचन, जीवन, प्रकाश या भले काम, धर्म के काम। आइए पढ़ते हैं एक या दो श्लोक। इफिसियों 2: 8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हाराउद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।
और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिये तैयार किया॥ फिर पहले विश्वास से औचित्य है जब प्रेरित हमें दिखाता है क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे। कोई क्रिया इसका कारण नहीं है।

जब हम उन शर्तों पर विश्वास करते हैं जिन्हें ईश्वर ने ईश्वर की कृपा से विश्वास द्वारा निर्धारित किया है, तो विश्वास द्वारा औचित्य है। या यहाँ मोक्ष शब्द का प्रयोग हुआ है। शुरुआत में हम विश्वास या मोक्ष के पहले चरण में प्रवेश करते हैं। इसके दसवें श्लोक में हम उनकी करतूत हैं। फिर एक काम करना होगा। वे अच्छे कामों के लिए मसीह यीशु में बनाए गए थे। तब हम भले कामों के लिए विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं। यानि धर्म का जीवन व्यतीत करना। प्रकाश देना। यहाँ अंग्रेजी में लिखा है we have been saved not of our works. हम विश्वास से धर्मी नहीं हैं, हमारे अपने कामों से नहीं। लेकिन भूलना मत but for good works.हम धर्म के कामों से धर्मी ठहरते हैं। उस धार्मिकता के कार्यों के द्वारा ही परमेश्वर का प्रकाश दूसरों में फैलता है। फिर हमें उन दो पहलुओं में भी महारत हासिल करनी होगी।वर्तमान काल में, अर्थात् वर्तमान काल में विश्वास द्वारा औचित्य। उस क्षेत्र पर जोर दिया जाता है जिसमें एक न्यायसंगत व्यक्ति रहता है और कोई ज्यादा बोलता या सिखाता नहीं है। क्योंकि यह बहुत अधिक विफलता है। क्या हम जायज हैं ? या यह असली है ? यह हमारे जीवन के माध्यम से है जिसे हम जानते हैं। एक यूहन्ना की पत्री है और इसका दूसरा अध्याय पद उनतीस . है यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उस से जन्मा है। इसका प्रमाण न्याय करना या न्याय करना है। यदि तुम जानते हो, कि वह धार्मिक है, तो यह भी जानते हो, कि जो कोई धर्म का काम करता है, वह उस से जन्मा है। यह परमेश्वर की धार्मिकता का कार्य है जिसे हमें याद रखना चाहिए। इसे समझने की कृपा हमारे पास होनी चाहिए। अन्य क्रियाएं हमारे स्वार्थ से आती हैं। यह हमारे नाम के लिए, प्रतिष्ठा के लिए, कई अन्य कारणों से हो सकता है। यदि इसमें कोई लाभ है, तो यह आत्म-धार्मिकता का कार्य है। परन्तु परमेश्वर के सब काम पिता की महिमा होंगे। इसके अलावा, उन कर्मों का मतलब यह नहीं है कि हम आविष्कार करते हैं और कुछ भी करते हैं, लेकिन जब हम धार्मिकता में रहते हैं, तो वे सभी कर्म जो भगवान ने हमारे जीवन से तैयार किए हैं। एक यूहन्ना तीसरा अध्याय सातवाँ पद। हे बालकों, किसी के भरमाने में न आना; जो धर्म के काम करता है, वही उस की नाईं धर्मी है। यह वहां की चेतावनी है कोई भी तुम बच्चों को गुमराह न करे। आज यह भ्रामक सलाह से भरा है। हम वहाँ धोखा न खाएँ। जैसा कि वह धर्मी है,वह जो धर्म करता है वह धर्मी है, जैसे प्रभु यीशु धर्मी हैं। जब यह न्याय के बारे में कहा जाता है जब कोई परमेश्वर के वचन के अनुसार आत्मा में रहना शुरू करता है उसमें से कोमलता आती है। उनमें करुणा, प्रेम और नम्रता जैसे दैवीय गुण प्रतिबिम्बित होते हैं। यह ईश्वर का प्रकाश है। उनमें जीवन था और जीवन पुरुषों का प्रकाश था। कार्रवाई में इसका खुलासा होगा।दूसरों के सामने यही फायदा है।इससे हमारे जीवन को भी लाभ होगा। इतना ही नहीं, सबसे बढ़कर, यह परमेश्वर के नाम की महिमा के लिए होगा।तीतुस के पत्र में कई छंद हैं। ये अच्छे काम खुद से नहीं आते, जैसा कि मैंने इसे रखा है। भगवान की धार्मिकता में, परमेश्वर की आत्मा से,जब हम जीना शुरू करते हैं तो हमारे जीवन में परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता होती है।

हमारी वाणी वरदान होगी।हम दयालु हैं, जब हम कुछ करते हैं, तो यीशु प्रभु की आंतरिक दया से वैसा ही करेंगे।उस सहानुभूति के साथ। जब उसने भीड़ को देखा, तो वह करुणा से द्रवित हो गया।लेकिन बहुत सारे लोगों को इकट्ठा करने के लिए नहीं।हमें बड़ा फिगर बनाने के लिए नहीं। उस करुणा के साथ प्रभु यीशु का मन कैसे पिघल गया जब उसने इन विकृत जीवनों को देखा जब हम उन कामों को करते हैं, तो हम में परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है।आइए हम उस पद की ओर लौटते हैं जिसे हमने रोमियों की पत्री के दूसरे अध्याय में पढ़ा था।रोमियों अध्याय 2 अध्याय 6 पद 6।वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा। जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। पर जो विवादी हैं, और सत्य को नहीं मानते, वरन अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा, पहिले यहूदी पर फिर यूनानी पर। यहाँ हमें अनन्त जीवन का एक श्लोक दिखाया गया है। रोमियों को पत्री के छठे अध्याय में अनन्त जीवन के बारे में एक महत्वपूर्ण पद भी है। यहां अच्छे कर्म की आवश्यकता है या वह प्रत्येक को अपने कर्म के अनुसार चुकाएगा।इसलिए, न्याय के कार्य बहुत महत्वपूर्ण हैं।कार्य हमारे द्वारा आने वाली परमेश्वर की धार्मिकता का परिणाम हैं। क्रिया शब्द का प्रयोग क्रिया के अर्थ के लिए भी किया जा सकता है।आत्मा का फल इसे इतना महत्वपूर्ण बनाता है।क्योंकि अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के साम्हने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किए हों पाए॥ फिर हमें उस श्लोक को खुद बार-बार याद करना होगा। तब हमें इसके बारे में पता होना चाहिए।इन छंदों को हमारे भीतर गहराई से लिखा जाना चाहिए ताकि हमारे जीवन के सभी क्षेत्र न्याय के अनुसार जी सकें। यहां अच्छे काम के लिए निरंतरता की जरूरत होती है आइए हम याकूब की पत्री में स्थिरता शब्द पर आते हैं।जेम्स वन के दो से चार पद। हे मेरे भाइयों, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, यह जान कर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। तब हम सुनते हैं और विश्वास जीवन बन जाता है। लेकिन अगले कुछ इलाकों में एक ऐसा क्षेत्र भी है जहां इसका परीक्षण किया जा रहा है. यह उस परीक्षण के माध्यम से कहा जाता है कि इसे खुश के रूप में गिना जाता है।याकूब 1:4 पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे॥ फिर दृढ़ता का सिद्ध कार्य हो, कि तुम बिना किसी कमी के सिद्ध और सिद्ध हो जाओ। फिर मुकम्मल,निरपेक्ष उस स्तर पर आना चाहिए। यानी स्थिरता के लिए हमारे जीवन में सही काम होना चाहिए। फिर अगर हम यह कहकर दुनिया की तरह जीते हैं कि हमने विश्वास किया और विश्वास किया, तो हम इस वास्तविकता तक कभी नहीं पहुंच पाएंगे। शुरुआत में मैं धैर्यवान था। विश्वास के द्वारा हम में वचन आत्मिक रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए। सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है। वह श्रवण अवश्य ही आना चाहिए जैसे परमेश्वर के मुख से सुना हुआ वचन। यहीं से विश्वास हमारे भीतर जीवन बन जाता है।परन्तु वह जो इस प्रकार वचन को ग्रहण करता है, उसकी जीवन यात्रा में एक पृष्ठभूमि होती है, जो तत्काल क्षेत्रों में हमारे विश्वास की परीक्षा लेती है।

यह हमारी परीक्षा ले रहा है। यानी यह हमारे विश्वास की परीक्षा के तौर पर यहां लिखा गया है। एक क्षेत्र है जहां हमारा परीक्षण किया जा रहा है। यहीं से हम स्थिरता की ओर आते हैं। केवल यही नहीं, वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज। हमने आशा के बारे में सीखा। तब आशा जीवित आशा होनी चाहिए। हमें संसार की आशा नहीं रखनी चाहिए, बल्कि कुछ शाश्वत की आशा रखनी चाहिए। भगवान की महिमा,तो यह इस परीक्षण में है कि हम स्थिरता नामक एक चरित्र पर आते हैं। हमारे सामने रेस सेट कैसे चलाएं ? लगातार दौड़ना चाहिए।अन्यथा जीवन ऐसी स्थिति में कभी भी एक जैसा नहीं रहेगा जहां यह हमेशा बहुत अनुकूल हो।हम जानते हैं कि फल देने वाले पेड़ को पृथ्वी के उस क्षेत्र में खड़े होने पर कई मौसमों से गुजरना पड़ता है। सर्दी आ रही है। वसंत आ रहा है वसंत खत्म हो गया है और गर्मी आ रही है। तो यह हर मौसम के बारे में है। इसके माध्यम से, अंतिम परिणाम प्राप्त किया जाता है। तब भगवान का हर युग में हर उद्देश्य होता है। हम जानते हैं कि पश्चिमी देशों में जब बहुत ठंड पड़ती है तो सारे पेड़ मर जाते हैं। हमें याद है कि यह खत्म हो गया था पत्ते बिना कुछ लिए झुलसे हैं। लेकिन यह किसी झुलसने से कम नहीं है। अंदर से, अगले वसंत में, सभी नए पत्ते फटने के लिए तैयार हैं। तब उसकी शक्ति उस शांत क्षेत्र में जमा हो जाती है। यह भगवान के बच्चे के जीवन में भी आवश्यक है। सेवा का मतलब दौड़ना नहीं है। भगवान के सामने बैठने का एक ही समय होता है जब हम बैठते हैं। जब शक्ति संग्रहित होती है तभी उसे पकड़ा जा सकता है। उसमें से ताजे पत्ते, जीवित पत्ते निकल रहे हैं।, फिर निरंतरता के लिए सही काम होना चाहिए। हमें उस स्थिरता पर आना चाहिए रोमियों अध्याय 2, पद 7 कहता है: हमें उस स्थिरता की तलाश करने की जरूरत है जो अच्छे काम के लिए जरूरी है महिमा और गरिमा अटूट हैं। उनके पास अनंत जीवन है। तो हम क्या ढूंढ रहे हैं ? जब प्रेरित यूहन्ना और अन्द्रियास ने प्रभु का अनुसरण किया तो प्रभु ने यही पूछा था तुम क्या ढूंढ रहे हो ? तो हम क्या ढूंढ रहे हैं ? क्या यह स्थलीय है ? क्या यह स्वर्गीय है ? फिर वही है जो हमें अलग करता है। यानी हम कौन हैं ? हम क्या खोज कर रहे हैं ? वह हमारा द्रव्यमान होगा यहोवा ने सारी युक्ति दी और कहा इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। देश की सलाह दी थी। देश सिद्धांत में है। यह प्रभु का सिद्धांत है जो हमें राज्य का उत्तराधिकारी बनाता है। वे शिक्षाएँ हमारे भीतर जीवन हैं। इस प्रकार स्वर्ग का राज्य हमारे भीतर है। वह स्थिति हमारे भीतर है। शब्द के बिना कुछ भी नहीं है। यदि कोई व्यक्ति इस तरह गाता और कार्य करता है, तो वह परमेश्वर के राज्य का वारिस नहीं हो पाएगा। परमेश्वर के राज्य की जान नहीं आएगी.. परमेश्वर का वचन इतना गंभीर है। सारी सृष्टि परमेश्वर के वचन से है। शब्द का अर्थ इस पुस्तक में लिखे गए छंदों की संख्या से नहीं है। इसे सबसे ऊपर देखा जाना चाहिए। जीवन पहले से ही संपूर्ण तक ही सीमित है। यह दिखाई नहीं देता। क्योंकि ये सिर्फ शब्द हैं यह परमेश्वर का वचन है, लेकिन यह पत्थर में लिखा है। कागज पर लिखा है। उसमें जीवन नहीं है। लेकिन जब आत्मा हमारे तैयार हृदयों में माध्यम के रूप में डाली जाती है, तभी वह जीवित होती है।

तो हम क्या ढूंढ रहे हैं? क्या आप उस जीवन की तलाश में हैं ? तुम क्या ढूंढ रहे हो ? गुरु जी आप कहाँ रहते हैं ? और वे उस दिन उसके साथ रहे। शुरुआत में यीशु ने खुद को उनके सामने प्रकट किया। जब वे लौटते हैं जब हर कोई कहता है कि दूसरा नबी वह नबी है और यह नबी प्रिय, हमें मसीहा मिल गया है। यह एक रहस्योद्घाटन है जो अभी शुरुआत है। इसके लिए कौन भुगतान करता है ? मसीहा स्वयं देता है। तब केवल खोजने वाले ही पाएंगे। हम क्या खोज कर रहे हैं? यह बहुत महत्वपूर्ण है। इब्रानियों अध्याय 12, पद 2 और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताकते रहें; जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्ज़ा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा; और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। नज़र। फिर यह सिर्फ एक नज़र नहीं है। इब्रानियों को पत्री के तीसरे अध्याय का पहला अध्याय। सो हे पवित्र भाइयों तुम जो स्वर्गीय बुलाहट में भागी हो, उस प्रेरित और महायाजक यीशु पर जिसे हम अंगीकार करते हैं ध्यान करो। ग्रीक में कई शब्द हैं। देखिए, हमारे यहां एक ही शब्द है। लेकिन ग्रीक में लुक्स के बारे में खास शब्द हैं। उस शब्द का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है कि देखो वहाँ खगोलशास्त्री है। एक तारे का अध्ययन करते समय, कुछ लोग अपना शेष जीवन एक तारे के बारे में जानने में व्यतीत करते हैं। इस तरह हमें कुछ जानकारी मिली। फिर आधी रात को अपनी दूरबीन से बैठे हुए उस तारे को कैसे देखें। एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, कभी-कभी जीवन भर। तो वह शब्द यहाँ ध्यान देने के लिए लिखा गया है। कितने लोगों ने समझा। यह सिर्फ इतना है कि हम केवल वचन को पढ़ रहे हैं। ऐसा कुछ भी हम पर, यीशु के बच्चों पर प्रकट नहीं किया गया है। इसकी छानबीन करें। वचन के द्वारा हमारे प्रभु को खोजो। हम इसका इंतजार करेंगे। हम जानते हैं कि इन दिनों रुको कहने के लिए हमें कुछ ताकत की जरूरत है। हमें यहां मंत्रालय की जरूरत है, हमें यह करने की जरूरत है, हमें यह करने की जरूरत है। हमारे पास पहले से ही बहुत स्वार्थ है। यह वह नहीं है जिसकी हमें तलाश करनी चाहिए। जब हम यीशु को पाते हैं, यीशु के साथ यात्रा शुरू करने के बाद हमें मंत्रालय के बारे में जानने की कोई जरूरत नहीं है। परमेश्वर ने जो ठहराया है, वह हम पर प्रगट होगा। परमेश्वर हमें उस तक ले जाएगा। तो आइए हम अपने महत्व को न खोएं। घोड़े को लाकर घोड़े की गाड़ी के पीछे न बांधें। हमारा महत्व सही होना चाहिए। ईश्वरीय व्यवस्था पर जोर दिया जाना चाहिए। इसलिए जब हम जीना शुरू करते हैं, तो हम यीशु को इस विश्वास के अगुवे और पूर्तिकर्ता के रूप में देखेंगे हम अपना जीवन पूरी तरह से जी सकते हैं। रोमियों को पत्री के दूसरे अध्याय का छठा अध्याय पढ़ें। अनन्त जीवन किसके लिए है? सातवें श्लोक में जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा। फिर महिमा शब्द है। अविनाशी के लिए एक शब्द है। क्षय नहीं, क्षय होता है, नाशवान से नाशवान तक। तो अब हमारे पास जो कुछ है वह सड़ रहा है। जब हम इस धरती पर हैं, हम एक ऐसी चीज हैं जो शरीर में होते ही नष्ट हो जाती है। लेकिन हमें इससे अटूट कुछ चाहिए। अगर हम अपना सारा समय इस क्षय के लिए लगा दें, तो क्या हमें वह मिलेगा जो अविनाशी है ?

यह एक प्रश्नचिह्न है। धरती से स्वर्ग तक हमें यही खोजना है यदि हम पार्थिव वस्तुओं के लिए दौड़ेंगे, तो क्या हमारे पास स्वर्गीय वस्तुएं होंगी? प्रश्नचिह्न है। फिर जो हम देखते हैं उससे जो हम नहीं देखते हैं। मैं अक्सर आपको अदृश्य की याद दिलाता हूं। फिर दृश्य से अदृश्य की ओर। ये सभी बाइबिल के छंद हैं। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं। दो कुरिन्थियों, अध्याय चार, पद 16 को पढ़ा जा सकता है। इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्या हम उसे कुछ देते हैं जो अंदर है? क्या जीवन का मन्ना जीवन के लिए भोजन प्रदान करता है? जब प्रेरित घुटने टेककर प्रार्थना करता है कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। क्या आप प्रार्थना करते है? प्रश्नचिह्न है। क्या हम बाहरी व्यक्ति के बारे में अधिक सोचते हैं? क्या यह उसके लिए है जो अंदर है? यह एक महान विचार है। यह एक बड़ा सवाल है। वहीं गलत। ज्यादातर समय बाहरी व्यक्ति के बारे में? या आप अंदरूनी सूत्र के बारे में क्या सोचते हैं? क्या आप अंदरूनी सूत्र के बारे में सोचते हैं? ईसाई जगत में आज जब ऐसा कोई प्रश्न पूछा जाता है, तो जैसे ही कोई ईमानदारी से आएगा, वे कहेंगे, "ओह, क्या ऐसा कोई आदमी है?" वो क्या है? फिर हम ऐसे समय पर आ गए हैं। लेकिन तब हमारा जोर अस्थायी से अनित्य पर, दृश्य से अदृश्य की ओर अस्थायी पर होना चाहिए। दो कुरिन्थियों अध्याय चौदह पद 17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। महिमा का शाश्वत भार। तेजस शब्द फिर से पद्य में प्रकट होता है। यहाँ महिमा की आशा है। यही वह आशा है जिसे हमें पहले विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराने के द्वारा प्राप्त करना चाहिए। हम परमेश्वर की महिमा की आशा में स्तुति करते हैं। यह विश्वास द्वारा औचित्य के बाद है। क्या तारीफ जैसी कोई चीज होती है? क्या यह वही है जो हम चाहते है? हम उस विकास की ओर कदम से कदम बढ़ा रहे हैं। लेकिन शुरुआत में हमें इसकी शुरुआत करनी होगी। इसे मिल जाना चाहिए था दो कुरिन्थियों अध्याय चौदह पद 18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं। हम कहाँ देख रहे हैं ? हमारी आँख कहाँ है ? हम जो देखते हैं वह हम नहीं देखते हैं, लेकिन जो हम नहीं देखते हैं।देखना अस्थायी है और न देखना शाश्वत है। दो कुरिन्थियों पाँचवाँ अध्याय सातवाँ पद क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं। फिर जब इस मार्ग की बात आती है, तो सच्चे विश्वास से न्याय होगा। तब आत्मा निवास करती है और आत्मा के नेतृत्व में जीवन में आती है। लेकिन जो केवल अध्यात्म चाहते हैं वे धीरे-धीरे आध्यात्मिक क्षेत्र में विकसित होंगे। जितना अधिक समय हम भगवान के सामने बैठकर बिताएंगे, उतना ही हमारी सोच आकार लेगी। इस क्षय से हम अनित्यता के विचार पर आते हैं। हम न केवल इसके बारे में सोचते हैं बल्कि इसमें विकसित होने लगते हैं।

सांसारिक क्षेत्र से आध्यात्मिक क्षेत्र तक। दूसरा यह है कि हम सांसारिक क्षेत्र में अधिक भागते हैं। लेकिन जो केवल अध्यात्म चाहते हैं वे धीरे-धीरे आध्यात्मिक क्षेत्र में विकसित होंगे। जितना अधिक समय हम भगवान के सामने बैठकर बिताएंगे, उतना ही हमारी सोच आकार लेगी। आध्यात्मिक मामले चिंतन की स्थिति में विकसित होते हैं। मैं इस उद्धार की वास्तविकताओं की बात करता हूं। यह कहना संभव नहीं है कि वह अभी बचा था। इसमें एक हकीकत है। मैं उस हकीकत तक पहुँचने से बच गया, मैं स्वर्ग जाऊंगा, या मैं मंत्री हूं। अब सभी मंत्रालय एक तरह की लत की तरह हैं। ऐसा आप हर जगह देखते हैं। छोटे बच्चों को अब दो प्रवचन दिए जा रहे हैं। हमें इन दिनों इसकी रिलीज की जरूरत है। इसके अंदर एक हकीकत है। पहले से ही एक दिव्य प्रावधान है जिसे प्राप्त किया जाना चाहिए। एक चर्च के आदेश को देखते हुए यह वहाँ है कि भगवान के सेवकों का एक समूह, जो परिपक्वता और विकास के लिए आया है, बढ़ता है, और इस तरह गतिविधि के इन सभी क्षेत्रों में ईश्वर की प्रणाली की स्पष्ट समझ पाई जाती है। इसमें रहने के लिए। कर्म और सेवकाई सब उसी जीवन से आनी चाहिए। जैसा कि भगवान के एक सेवक ने मुझे कुछ साल पहले बताया था, ऐसे कई नौकर हैं जिनके कोई पिता नहीं है, यानी कोई पिता नहीं है। यानी कोई अनुशासन नहीं मिला। हम जानते हैं कि जब कोई बच्चा बड़ा होता है तो वह अपने माता-पिता के अनुशासन में बड़ा होता है। इसी तरह आध्यात्मिक बच्चों का विकास होना चाहिए। अगर वे नहीं बढ़ते हैं, तो चर्च आध्यात्मिक रूप से विफल हो जाएगा। कलीसिया में जो पिता इतने आत्मिक हैं, वे ऐसे नहीं हैं। चर्च ऑफ गॉड में आज बहुत कम हैं जिनके पास वह प्यास है, या आत्मज्ञान का वह मिशन है, जो आध्यात्मिक परिपक्वता के लिए उसमें विकसित हो सके। भगवान का शुक्र है कि ऐसे लोग हर जगह होते हैं। मैं उन सभी को देखना चाहता हूं। चर्च पर बपतिस्मा लेने की जिम्मेदारी है। उसे शिष्य बनना चाहिए। उसे शिष्य बनाओ। बपतिस्मा लेने से क्या फायदा? बपतिस्मा शिष्य बनने का एक तरीका है। एक नौकरी में प्रवेश करता है क्योंकि वह काम करना चाहता है। अगर वह वहां बैठकर चाय पी रहा है और मिठाई खा रहा है, तो काम नहीं चलेगा। क्या आप मेरी बात की गंभीरता को समझते हैं ? ये बहुत गंभीर मुद्दे हैं, भगवान के बच्चे चर्च की पूरी नींव चली गई है। क्योंकि जो कुछ प्रभु ने हमें आज्ञा दी है उसे हमने हल्के में लिया है और दुनिया भर से कुछ सिद्धांतों और कुछ शर्तों को लाया है और इसके आधार को पूरी तरह से बदल दिया हैपहले इसे मिश्रण कहा जाता था लेकिन अब यह मिश्रण नहीं है अब वचन को परमेश्वर की कलीसिया में लाना असंभव है। क्योंकि आज चर्च एक ऐसी स्थिति में है जहां पूरी दुनिया भरी हुई है। मुझे आपको यह बताते हुए बहुत अफ़सोस हो रहा है। एक शुरुआत कहीं हमें इन दिनों बहुत अधिक प्रार्थना करने की आवश्यकता है ताकि कहीं एक सच्ची कलीसिया प्रकट की जा सके। इसके लिए हमें खुद को विनम्र करना चाहिए। अक्सर मुझे याद आता है कि मेरे पास यह सब कहने का समय नहीं था। तुम मेरे मुंह से निकल रहे हो। ना कहने का समय नहीं है, आइए इसके लिए खुद को समर्पित करें। यानी जीवन और अमरता की तलाश करने वाला समूह। रचनात्मक क्षेत्र की खोज करने वाला एक समूह। अस्थायी नहीं, बल्कि अनंत काल के लिए।

एक समूह जो उस अनंत काल की इच्छा रखता है, उसे एक समूह में ढाला जाना चाहिए। क्योंकि जो कुछ वचन में लिखा है वह अनन्त जीवन के लिए है। प्रभु परमेश्वर हमें उस एक रहस्योद्घाटन तक पहुंचाएं। हम क्या खोज कर रहे हैं? यहां बैठकर आप क्या सोचते हैं। हम क्या खोज कर रहे हैं? यह महिमा भी हमारे पास आने वाली महिमामय अभिव्यक्ति है, जो अटूट है जो हमारे पास आने वाली है, हमारा खजाना इस धरती में नहीं है, जिसे कीड़े और जंग खा जाते हैं, और जिसे चोरों द्वारा छीन लिया जाता है। यह हमारे भीतर प्रकट होता है। बिना कीड़े और जंग के स्वर्ग में, और चोर चोरी नहीं करते। यहीं से हमारे जीवन का क्रम सब कुछ बदल देता है। हमारा महत्व सब कुछ बदल रहा है। परमेश्वर के वचन में विश्वास ही वह विश्वास है जो हमें इस आशा की ओर ले जाता है। अमरता, अनंत काल, महिमा, आध्यात्मिकता जिसके बारे में हम अभी बात कर रहे हैं। तो परमेश्वर के वचन में विश्वास ही वह विश्वास है जो हमें इस तक ले जाता है। भगवान भगवान हमें इसे अच्छा समझने में मदद करें। रोमियों अध्याय अट्ठाईस, उनतीस पदों का दूसरा अध्याय पढ़ें। क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रगट में यहूदी है और न वह खतना है जो प्रगट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती इससे ऊपर का सत्रहवाँ श्लोक पढ़ते समय यदि तू यहूदी कहलाता है, और व्यवस्था पर भरोसा रखता है, और परमेश्वर के विषय में घमण्ड करता है। और उस की इच्छा जानता और व्यवस्था की शिक्षा पाकर उत्तम उत्तम बातों को प्रिय जानता है। और अपने पर भरोसा रखता है, कि मैं अन्धों का अगुवा, और अन्धकार में पड़े हुओं की ज्योति। और बुद्धिहीनों का सिखाने वाला, और बालकों का उपदेशक हूं, और ज्ञान, और सत्य का नमूना, जो व्यवस्था में है, मुझे मिला है। सो क्या तू जो औरों को सिखाता है, अपने आप को नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है ? तो यह एक ऐसा समूह है जो शब्द जानता है, लेकिन केवल यह कि सब कुछ बाहरी है। मैं इस तरह वर्षों पहले पढ़ा करता था कि वह जो पेंटेकोस्टल है वह पेंटेकोस्टल नहीं है। तो हमें पूछना होगा, क्या यह बाहरी है? क्या यह आंतरिक है? रोमियों को पत्री में पढ़ाए जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक आत्मा में जीवन है। लेकिन विश्वास में बपतिस्मा लेने के बाद शरीर में रहने का जीवन। यह हकीकत नहीं है। तो यहीं हमें इसकी तलाश करने की जरूरत है। आत्मा में जीवन क्या है? इसकी व्यावहारिकता क्या है? सलाह सब कुछ पता चल जाएगा। उपरोक्त सिद्धांत सर्वविदित है लेकिन जब इसे पढ़ा जाता है तो यह आज के पिन्तेकुस्त से भी अधिक भव्य होता है। जैसा कि हम कानून से पढ़ते हैं, हम उसकी इच्छा को जानते हैं और मतभेदों को जानते हैं।वह बहुत ऊंचा क्षेत्र है। तुम साधारण लोग नहीं हो, क्योंकि तुमने व्यवस्था से ज्ञान और सत्य का रूप ग्रहण किया है। अगर वहाँ एक समस्या है तू अपने आप को क्यों नहीं ताड़ना देता, कि दूसरे को उपदेश दे? यानी जीवन नहीं है। मैं सब कुछ जानता हूं, लेकिन जीवन नहीं है। जब आप ना कहते हैं तो क्या आप चोरी करते हैं? कोई जीवन नहीं है। अगर हम देखें तो यह कमाल है। सुबह की प्रार्थना होती है।

शाम की नमाज होती है। वचन सब कुछ जानता है, रोमियों को पत्री सिखाती है, फिर इसे अच्छी स्वच्छता के रूप में पढ़ाया जाएगा। लेकिन इन सबके बिना जीवन क्या अच्छा है ? जैसा कि मैं आमतौर पर कहता हूं, मैंने बहुत कुछ नहीं सीखा है लेकिन मुझे जो जीना है उसे पाने के लिए पर्याप्त है। मैं यही प्रार्थना कर रहा हूं। हे प्रभु, मुझे जो जीना है उस पर विजय पाना है। लिआह डॉक्टर और विज्ञान वह सलाह और यह सलाह और सलाह जो अभी तक खोजी नहीं गई है, इसमें से किसी की भी आवश्यकता नहीं है। यह सिर्फ एक धोखा है। किताबों का एक गुच्छा पढ़ना और इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। यदि हमारे पास जीने का वचन है, तो हम बच जाते हैं। हमारे लिए इतना ही काफी है, हमें इसके लिए प्रार्थना करनी चाहिए हे प्रभु, मुझे वचन, स्वर्गीय परामर्श, अध्ययन करने या ऐसा जीवन जीने के लिए जिसे उसने एक धर्मी जीवन जीने के लिए ठहराया है।रोमियों अध्याय अट्ठाईस, उनतीस पदों का दूसरा अध्याय पढ़ें। क्योंकि वह यहूदी नहीं, जो प्रगट में यहूदी है और न वह खतना है जो प्रगट में है, और देह में है। पर यहूदी वही है, जो मन में है; और खतना वही है, जो हृदय का और आत्मा में है; न कि लेख का: ऐसे की प्रशंसा मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है॥ रोमियों अध्याय 7, पद 6.परन्तु जिस के बन्धन में हम थे उसके लिये मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए, कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं, वरन आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं॥ यह आत्मा में जीवन है। यह कहने के लिए कि यहां कानून के अपवाद हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि कोई कानून नहीं है, ऐसा नहीं है कि परमेश्वर का वचन मौजूद नहीं है, लेकिन वह शब्द हमारे भीतर बन गया। इब्रानियों अध्याय 8, पद 10। फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्त्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनों में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे। कानून इस बारे में नहीं है कि किताब में क्या है। लेकिन यहाँ प्रेरित का अर्थ पत्र के शब्द से है। यहाँ पढ़ते समय पत्र की उम्र में नहीं। पत्र तब है जब हम इसे एक अलग भाग में पढ़ते हैं 2 कुरिन्थियों अध्याय 3 पद 3। यह प्रगट है, कि तुम मसीह की पत्री हो, जिस को हम ने सेवकों की नाईं लिखा; और जो सियाही से नहीं, परन्तु जीवते परमेश्वर के आत्मा से पत्थर की पटियों पर नहीं, परन्तु हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी है। हमारी इस पुस्तक में लिखा हुआ वचन हमारे भीतर के आत्मा के द्वारा है। जैसा कि हम इब्रानियों की पुस्तक में पढ़ते हैं, मैं अपनी व्यवस्था उनके भीतर रखूंगा और उनके हृदयों में लिखूंगा: यह आत्मा का वचन है। इसी के बारे में हम रोमियों के आठवें अध्याय के दूसरे पद में पढ़ते हैं क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया। रोमियों के लिए पत्री में स्वतंत्रता शब्द कई स्थानों पर प्रकट होता है। अगर हम इसे ध्यान से पढ़ें, तो हम देख सकते हैं कि यह हर जगह आत्मा का दस्तावेज है। पत्र आत्मा नहीं है जब प्रेरित इस पत्र को कहता है, तो कानून पत्र के पत्र की बात कर रहा है। परन्तु नई व्यवस्था तब है, जब आत्मा में व्यवस्था हम में लिखी हुई है, यही जीवन का वचन है। जीवन की आत्मा का सिद्धांत भी वहाँ दस्तावेज़ के रूप में लिखा गया है।

रोमियों के पत्री के आठवें अध्याय में चौथा पद। इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए। अर्थात्, जो व्यवस्था में है, वह हमारे भीतर जीवन में आती है, और जब हम उस जीवन में रहते हैं, तो उसके भीतर धर्म के काम निकल आते हैं। तब यह कोई समारोह नहीं है, यह कोई अनुष्ठान नहीं है। फसह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे हम मानते हैं, यह हम में पूरी होती है। खमीर ऐसा कुछ नहीं है जिसे हम देखते हैं हम में अखमीरी रोटी पूरी होती है। अखमीरी रोटी का जीवन पवित्र है। पुराने नियम में जब यह कहा जाता है कि कोई खमीर नहीं है, तो इसका शाब्दिक अर्थ है जब वे इसका पालन करते हैं लेकिन अगर हम यहूदियों से इसके बारे में बात करें तो वे कहेंगे कि हम इसे सिर्फ देख नहीं रहे हैं, हमें इससे एक संदेश मिल रहा है। हमें पवित्रता में रहना चाहिए। हम उस हिस्से को नहीं समझते हैं, लेकिन अगर हम बचाए गए यहूदियों से पूछते हैं, तो न केवल घर की सफाई से हम सभी खमीर को हटाते हैं, बल्कि हमारी सफाई भी करते हैं। यहूदी इसके बारे में सोचेंगे। प्रायश्चित दिवस उनका पर्व है। उन दिनों में वे यहोवा के सामने बैठकर कहते, "प्रायश्चित।" क्या मैंने पिछले एक साल में किसी के साथ कुछ गलत किया है? ऐसे यहूदी भी हैं जो हर दिन इसके बारे में सोचते हैं। जब मैं उनकी किताबें पढ़ता हूं, तो मैं उन्हें फोन करता हूं और माफी मांगता हूं अगर उन्होंने अपने चेहरे के भाव को ठेस पहुंचाई या बदल दिया है। अभी भी यहूदी हैं जो जीवन को इतनी गंभीरता से लेते हैं। तब हमें इस सब से कुछ संदेश मिलता है। यहां हम जैसा महसूस करते हैं वैसा ही रहते हैं, उन्हें दोष देते हैं और उन्हें दोष देते हैं, चर्च आते हैं, झगड़ा करते हैं और सांसारिक प्रेमियों के रूप में दौड़ते हैं, यह कहते हुए कि भगवान की कृपा मुझे बचाएगी, भले ही मैंने सभी पद और सम्मान हासिल कर लिए हों। लेकिन इसका कोई मतलब नहीं है। यह मूर्खतापूर्ण सोच है। जब कृपा की बात आती है मैं इसे बार-बार कहूंगा वासनापूर्ण कृत्य के लिए नहीं। यहोवा निश्चय ही हमें हमारी दुर्बलताओं को क्षमा करेगा। समय पर अनुग्रह प्राप्त करने के लिए अनुग्रह के सिंहासन पर दौड़ने के लिए हमारे लिए वह प्रवेश द्वार खुला है। लेकिन परमेश्वर नहीं चाहता कि हम इस जीवन यात्रा में पाप से पाप की ओर जाएं। हम कदम दर कदम पापी प्रवृत्तियों से मुक्त होने, परमेश्वर के वचन और परमेश्वर की आत्मा की शक्ति से मुक्त होने के लिए बुलाए गए हैं। अच्छा होता अगर भगवान के बच्चे यह जानते। यह एक शक्तिशाली मार्ग है, भगवान के बच्चे। उसने परमेश्वर का आत्मा और जीवित वचन दिया। भगवान की आत्मा को देखते हुए जीवित शब्द दिया, यदि कोई प्रतिज्ञा है कि परमेश्वर का वचन, जिसने सब कुछ बनाया है, हम में प्रवेश करेगा यदि हमारे पास यह प्रतिज्ञा है कि आत्मा हम में वास करता है और आत्मा के द्वारा चलाई जाती है यह तब होता है जब हम इसके जीवन की वास्तविकता में आते हैं कि हम आत्मा मानव बन जाते हैं। यह सब दूर करने के लिए भगवान की शक्ति है, आत्मा की शक्ति, वचन की शक्ति, हमारे भीतर काम कर रही है। और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।

हमें शैतान की गुलामी में जीने के लिए नहीं बुलाया गया है। हमें पाप में जीने के लिए नहीं बुलाया गया है। हमें दुनिया के प्यार में जीने के लिए नहीं बुलाया गया है। परमेश्वर की आत्मा हमें यह एहसास देती है कि हम स्वर्गीय हैं परमेश्वर का वचन हम में जीवन के लिए आता है। परमेश्वर ने हमें एक ऐसे जीवन का वादा किया है जिसमें हम उस जीवन में आत्मा की शक्ति से इन सभी पर विजय प्राप्त कर सकते हैं यही हमारा वादा है वही हमारा जीवन है। प्रभु परमेश्वर हमें उस वास्तविकता में, उस स्वर्गीय क्षेत्र में ले आएं। बाहरी नहीं अंदर क्या है? खतना भीतर की ओर जाने की क्रिया है। जैसा कि हम उस खतना किए गए कुलुस्सियन लेख में बपतिस्मे के बारे में सीखते हैं प्रेरित ने वहाँ लिखा कुलुस्सियों अध्याय 2 छंद ग्यारह और बारह। उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। यानी उसका खतना किया गया था और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। वह किस प्रकार की व्यावसायिक शक्ति है क्या आपने इसका अनुभव किया है? मुझे यह चाहिए। मैंने विश्वास में अपने बपतिस्मे के समय ऐसा अनुभव नहीं किया था। मुझे नहीं पता था, किसी ने नहीं पढ़ाया। लेकिन हम एक ऐसे क्षेत्र में थे जहां हमें इसके बारे में पता नहीं था, लेकिन जब हम विश्वास में बपतिस्मा लेते हैं, तो कुछ होता है। उस समय हमारे पास ज्यादा अनुभव नहीं है लेकिन एक कार्रवाई चल रही है। क्योंकि हमें आज्ञा का पालन करना चाहिए। हमें आज्ञा के पालन में जीने के लिए बपतिस्मा लेना चाहिए। हमें विश्वास के बपतिस्मा को इस आश्वासन के साथ प्राप्त करना चाहिए कि हम बूढ़े आदमी, यानी आदम को दफना देंगे, और मसीह में एक नए व्यक्ति के रूप में जीवन के नवीनीकरण में चलेंगे। अगर कोई सलाह नहीं होनी चाहिए, तो वह ज्ञान नहीं है। वहाँ भी, बपतिस्मा एक मात्र अनुष्ठान बन जाता है। लेकिन भीतर पहले से ही एक व्यापार बल है। अर्थात्, बपतिस्मे के द्वारा तुम उसके साथ गाड़े गए, और उस विश्वास के द्वारा जो परमेश्वर की व्यापारिक शक्ति ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, वह जीवित विश्वास है। यही वह विश्वास है जो हममें काम करता है। हमारे सभी प्रियजनों को जो यहां बपतिस्मा लेते हैं, उनके पास इसकी व्यावसायिक शक्ति होनी चाहिए जब हम इन अंशों को पढ़ते हैं। हमें इसे बार-बार पढ़ना चाहिए। इसका ध्यान करना चाहिए। इसे अंदर डालना होगा। इस प्रकार पवित्र आत्मा कभी-कभी हमें इसकी याद दिलाएगा। हमें उस व्यापार शक्ति के लिए हम में जारी रहने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। हम प्रेरित को इफिसियों की पत्री में प्रार्थना करते हुए पाते हैं। यह एक प्रार्थना है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार। हमें इसका अनुभव करना चाहिए और इसे जानना चाहिए। यही जीत का जीवन है। वह आंतरिक खतना है। परमेश्वर की आत्मा भीतर काम कर रही है। परमेश्वर का वचन भीतर काम कर रहा है। यदि वचन बाइबल में है, तो वह नहीं गिरेगा। आप सिर के बल लेट नहीं सकते और न ही बिना देखे पढ़ाई कर सकते हैं। उसके भीतर का जीवन, हमें वचन की शक्ति का अनुभव करना चाहिए।

हमें अपने जीवन में प्रतिदिन उस आध्यात्मिक विकास का अनुभव करने की आवश्यकता है। हम आम लोग नहीं हैं हमें इस जागरूकता से शासित होना चाहिए कि हम स्वर्गीय हैं। इस धरती के लिए जीने वाला कोई नहीं। हमें इस वास्तविकता में आना चाहिए कि हमें एक स्वर्गीय मिशन सौंपा गया है और पृथ्वी पर रखा गया है। उन्होंने अपने विश्वास के जीवन की शुरुआत यह स्वीकार करते हुए की कि वे अजनबी और अजनबी थे। वे इस धरती पर रहने के लिए परदेशी और परदेशी के रूप में उतरे। इसलिए उनके पास एक स्वर्गीय दर्शन था। वे अपनी मातृभूमि की तलाश कर रहे हैं। वे किस शहर की तलाश में हैं ? वे कुछ स्वर्गीय चाहते थे, सांसारिक नहीं। पुराने नियम के विश्वासी इस स्वर्गीय प्राणी को देखने के लिए अपनी आँखें खोलते हैं। क्या परमेश्वर की प्रजा, जो मसीह यीशु के द्वारा छुड़ाई गई थी, और परमेश्वर की प्रजा जो आत्मा से भरी हुई थी, हमारी आंखें खोल दें कि स्वर्ग में क्या है ? यही वह जगह है जहां हम स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं जब हम दैनिक स्वर्गीय जीवन जीने और स्वर्गीय यीशु को देखने और विश्वास के नेता और पूर्तिकर्ता को देखते हैं। वही हमारा जीवन है। कुछ बाहरी कर्मकांडों से इसे हासिल नहीं किया जा सकता है। जब हम वास्तव में कहते हैं कि हम अंदर से यहूदी हैं, तो इस्राएली, उन्हें परमेश्वर की संतान बनना चाहिए। वे वही हैं जिनकी परमेश्वर द्वारा प्रशंसा की जाती है, न कि पुरुषों द्वारा। कितने लोगों ने समझा? क्या ये शब्द आपसे बोलते हैं? रोमियों को लिखी पत्री के तीसरे अध्याय का पद 23 पढ़ें। इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। यही वह है जिसे प्रेरित ने शुरू में यहाँ स्थापित किया था। जैसा कि हम निम्नलिखित अध्यायों को पढ़ते हैं, हम उन लोगों के समूह के बारे में बात कर रहे हैं जो अन्याय के माध्यम से सत्य को बाधित कर रहे हैं। ऐसा ही लोगों के एक समूह के बारे में कहा जाता है जिनका न्याय किया जा रहा है। ये तीनों वर्ग हैं। फिर यहूदी है। पहला एक ऐसा समूह है जिसमें कोई चेतना नहीं है। यह एक अस्तित्वहीन समूह है जो अन्याय के माध्यम से सत्य को बाधित करता है। दूसरे अध्याय में उनमें कुछ नैतिक गुण हैं। इसलिए दूसरों को आंका जाता है। यह हो गया, यह हो गया, यह हमारा पेंटेकोस्टल स्वभाव है यह उन लोगों की विशेषता है जो बपतिस्मा लेने के लिए आगे आते हैं। बाकी सभी को जल्दी से जज करना। तो उनमें कुछ चीजें ऐसी हैं जिनसे अंदाजा लगाया जा सकता है कि कुछ हद तक नैतिक हैं। वह भी पाप है। और यह दूसरे समूह के बारे में है नव-यहूदी के नाम से, अर्थात्, वे वचन का ज्ञान रखते हैं, और मतभेदों को जानते हैं, और कानून से ज्ञान और सच्चाई का रूप प्राप्त करते हैं। एक ऐसा समूह है जो दूसरों को सलाह देता है लेकिन यह सब बाहर है। वास्तव में अंदर कुछ भी नहीं है। इसलिए आज जब हम यहां बैठे हैं तो हमें खुद को परखने की जरूरत है। क्या हमारी बाहरी भक्ति है? या अंदर कुछ है ? परमेश्वर का वचन हमें इस हद तक प्रकट करता है कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, क्या परमेश्वर के आत्मा का कार्य हमारे भीतर है? शब्द कहाँ है? बाहर या अंदर? आत्मा कहाँ है? के भीतर? बाहर?हमें खुद जांच करनी चाहिए। हमारे अंदर कैसा जीवन है? पुरानी ज़िंदगी? या यह मसीह का जीवन है जिसे हम वचन के द्वारा प्राप्त करते हैं? हमें इसके बारे में सुनिश्चित होने की जरूरत है।

2 तीमुथियुस III अध्याय 4,5 छंद विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। यहाँ हम देखते हैं कि हम परमेश्वर के प्रेम के बिना सुखों के प्रेमी बन गए हैं। हमें खुद से पूछने की जरूरत है, क्या हम वास्तव में इस भगवान से प्यार करते हैं? आपको कैसे मालूम? जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं वे हमेशा परमेश्वर के साथ संगति में चलेंगे। वे वही खोजते हैं जो दैवीय है। वे वही खोजते हैं जो परमेश्वर को भाता है। जैसा कि हम इफिसियों में पढ़ते हैं वे उन लोगों का समूह हैं जो ज्योति में चलते हैं, यह जांचते हैं कि यहोवा को क्या भाता है। जब हम सुबह प्रार्थना में बैठते हैं, तो हमें यह समझने के लिए कि परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन कैसे जीना है, हमें परमेश्वर के वचन पर मनन करने की आवश्यकता है। तब हमारा जीवन आध्यात्मिक अर्थों से समृद्ध होगा। हम जो देखते हैं, जो सुनते हैं, जो सोचते हैं, जो प्रार्थना करते हैं, जिस पर मनन करते हैं, और जिसे हम जोड़ते हैं, वह सब हमारे आध्यात्मिक जीवन के दायरे में होगा।वही अध्यात्मवादी कहलाते हैं। यही उनके जीवन का महत्व है। फिर हमारे पास भौगोलिक क्षेत्र हैं। बेशक हमें वहां भी कुछ समय बिताना चाहिए। क्योंकि इसकी एक संतुलित अवस्था होनी चाहिए। फिर, अगर वह संतुलन गलत है, तो चीजें गड़बड़ा जाएंगी। कुछ लोग कहते हैं कि वे आध्यात्मिक हैं, लेकिन जब वे इस धरती पर होते हैं तो वह नहीं करते जो उन्हें करना चाहिए। बस, इतना ही। फिर उसका संतुलन अच्छा होना चाहिए। लेकिन पहले उसके देश की तलाश की जानी चाहिए। आखिरकार, अगर हम सोचते हैं कि हम भगवान को थोड़ा समय दे सकते हैं, तो भगवान इससे प्रसन्न नहीं होंगे। भगवान हमेशा पहला फल चाहता है। कितने लोगों ने समझा ? भगवान चाहता है पहला फल परमेश्वर हमारे जीवन का पहला भाग चाहता है। यदि वह पहले पवित्र है, तो बाकी सब पवित्र होगा। भगवान का सेवक 'Andrew Murray जैसा लगता है, के बारे में उनकी "The Inner Champer And The Inner Life" उन्होंने . नामक पुस्तक में लिखा है यदि आपके जीवन की शुरुआत दो घंटे पवित्र है, तो अगले बाईस घंटे पवित्र होंगे। हमें परमेश्वर के उस सेवक की पवित्रता के संदेश के माध्यम से कम से कम दो घंटे के लिए भगवान की उपस्थिति में होना चाहिए वह कहता है कि वह एक घंटा है और मैं कहूंगा कि कम से कम दो घंटे। भगवान के साधारण सेवकों को इससे भी ज्यादा की जरूरत है। जिस भूमि पर हम बैठे हों वह पवित्र भूमि हो। तो फिर, पवित्र भूमि कैसी है ? परमेश्वर की उपस्थिति परमेश्वर की संगति में पहुंचनी चाहिए। पवित्र व्यक्ति हमारी प्रतीक्षा कर रहा है। सात पर्व देते समय वर्ष में तीन बार आना चाहिए। यह वह नहीं है जो वे बनाते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि आप तबला बजाएं और भगवान के पास आएं। मंदिर में भगवान की उपस्थिति है। भगवान ने कैलेंडर पहले ही दे दिया था। आपको साल में तीन बार मेरे पास आना होगा। मैं आप में से प्रत्येक को एक चर्च के रूप में देखना चाहता हूं। मैं एक चर्च के रूप में आपके साथ संगति रखना चाहता हूं। कितने लोगों ने इसे समझा? यही वह है जिसे हम अब परमेश्वर के पास लाना चाहते हैं।

इसी तरह परमेश्वर के बच्चों ने सभी गीत गाए। हम इसे तब जानते हैं जब हम भजन संहिता 211 . के कुछ अंश पढ़ते हैं उदगम गीत, गीत माउंट सिय्योन को जाता है। यदि पहिले फल पूलों का पर्व हैं, तो सब पहिले फल हाथ में हैं। क्या कारण है? भगवान उन पर नजर रख रहे हैं। हमें उस ईश्वर की उपस्थिति में जाना चाहिए। भगवान वहीं बैठे हैं। बच्चे इंतज़ार कर रहे हैं हमें याद रखना चाहिए कि हमारे जीवन में, हमें याद रखना चाहिए कि हमारे जीवन में उस सुबह भगवान हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मेरा बेटा और बेटी अब आ रहे हैं और मेरी एक फेलोशिप है। लेकिन हम दौड़ने के बाद भगवान के एक शब्द कहने से पहले जगह छोड़ देंगे और उसे अपनी जरूरतें बताएंगे और इसे जल्दी से पूरा करेंगे। हमारी सुबह की प्रार्थना ऐसी नहीं होनी चाहिए। हमें जाकर इंतजार करना होगा। भगवान वहाँ है। कुछ लोगों को भगवान की वह उपस्थिति तुरंत नहीं मिलती क्योंकि दुनिया भर से आने पर उन्हें वह नहीं मिलती। लेकिन पवित्र है, दूसरे शब्दों में, पवित्र हम में है। हमें इस पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तैयार करें फिर बाहर मत देखो, कहीं भी टैप न करें क्या वहां संत है ? कहां? यह हम में है लेकिन आइए उस उपस्थिति को समझते हैं। जब हम उस उपस्थिति में आते हैं तो परमेश्वर हमसे बात करता है। जब हम परम पवित्र स्थान में प्रवेश करते हैं तो भगवान हमारे साथ बातचीत करते हैं मूसा के पास और कोई विनती या प्रार्थना नहीं थी। जब हम परम पवित्र स्थान पर आते हैं तो यह परमेश्वर ही बोलता है एक जगह है जहां भगवान की आवाज सुनी जाती है। भगवान भगवान हमारी मदद करें। यहूदी अंदर है। आत्मा में हृदय का खतना, अक्षर में नहीं

Editing & Publishing

Amen TV Network
Trivandrum,Kerala
Mob : 999 59 75 980 -
755 99 75 980
Youtube : amentvnetwork

more details

Pastor.Benny
Thodupuzha
MOb: 9447 82 83 83

Pastor.Rajan Victor
Trivandrum
MOb:9495 333 978